VI Semestar

Page No: ....
Date: ..../..../....

खेल

खेल, खेल होते हैं। खेल को किसी अन्य शब्द से समझाया नहीं जा सकता है। बल्कि 'खेल' शब्द से ही अन्य क्रियाओं की प्रकृति और स्वरूप को समझाने के लिए प्रयोग किया जाता है। प्रायः कहा जाता है, "खेल-खेल में उसने काम कर डाला", अथवा 'क्या खेल समझ रखा है?' खेल खेलपूर्ण क्रिया है को कहते हैं। खेल में कुछ-न-कुछ क्रिया होती है जो स्वच्छंद होती है और आनन्ददायनी होती है।

खेल की परिभाषा :- क्रो तथा क्रो ने खेल को इस प्रकार परिभाषित की है "Play can be defined as the activity, in which a person engages, when he is free to do what he wants to do."

अर्थात् खेल वह क्रिया है जिसमें व्यक्ति उस समय व्यस्त रहता है जब वह जिसमें वह व्यस्त है, उसमें व्यस्त रहने के लिए स्वतंत्र रहता है। खेल निरुद्देश्य क्रिया है। खेल; खेल के लिए ही की जाने वाली क्रिया है।

मेण्डानल ने खेल को परिभाषित करते हुए कहा "Play is an activity for its own snke, it is a purposeless activity, which does not strive towards any fixed goal."

अर्थात् खेलने वाला बच्चा किसी उद्देश्य को मन में रखकर नहीं खेलता है। खेल तो उसके तन मन से स्वतः प्रस्फुटित क्रिया है।

वैलेन्टाइन के अनुसार, "खेल कार्य में एक प्रकार का मनोरंजन है।"

अर्थात् मनोरंजन प्रदान करने वाले काम ही खेल है।

Scanned with CamScanner

खेल और काम में अन्तर

काम का एक निश्चित उद्देश्य होता है। कार्य किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया किया जाता है जबकि खेल का उद्देश्य केवल मनोरंजन होता है। खेल का उद्देश्य केवल खेलना होता है।

खेल सहज - स्वतंत्र क्रिया है। खेल में बाध्यता नहीं होती। काम करने के लिए व्यक्ति स्वतंत्र नहीं होता है। काम तो काम होता है, उसे मन हो या नहीं हो, करना ही पड़ता है।

खेल में कल्पना का अंश रहता है। बच्चा छड़ी को घोड़ा मान कर खेल सकता है। कार्य में कल्पना का अंश नहीं होता है।

कार्य में आनंद तब प्राप्त होता है जब काम सफलता पूर्वक सम्पन्न होता है अर्थात् उसका उद्देश्य पूरा हो जाता है। परन्तु खेल में उसी समय आनंद मिलता है जब कि खेल खेला जा रहा है।

खेल सभी बच्चे खेलते है और खेलना उनकी स्वतः प्रेरित और स्वाभाविक प्रवृति से प्रेरित होकर होता है। जब कि काम स्वाभाविक और स्वप्रेरित प्रवृति नहीं है। काम कहे जाने पर या उद्देश्य तक पहुँचने की अपनी इच्छा से किया जाता है

Scanned with CamScanner

खेल का प्रकार

1. स्वतंत्र, निर्बाध और स्वप्रेरित खेल
2. कल्पना प्रधान खेल
3. रचनात्मक खेल
4. क्रीड़ाएँ

खेल के सिद्धान्त

1. अतिरिक्त शक्ति के सिद्धान्त
2. पुनरावृति का सिद्धान्त
3. पूर्वाभिनय का सिद्धान्त
4. मूल प्रवृति का सिद्धान्त
5. शक्तिवर्धन का सिद्धान्त
6. विश्राम सिद्धान्त
7. परिष्कार का सिद्धान्त

Scanned with CamScanner

Date:.../.../...

खेल का महत्व

खेल का न केवल बच्चों के लिए, अपितु सभी आयु के लोगों के लिए अत्यधिक महत्व है। विश्व भर के विद्वानों ने और बाल मनोवैज्ञानिकों ने एक स्वर से बच्चों के लिए खेल के महत्व को स्वीकार किया है। खेल से बच्चा बहुत कुछ सीखता है और जीवन-पथ पर सफलता-पूर्वक चलने का अभ्यास करता है। खेल की प्रवृति बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए निःसंदेह एक प्रकृतिप्रदत्त अनमोल वस्तु है। खेल से बच्चों में शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक विकास होता है। खेल से बच्चे दूसरों का ख्याल रखना सीखते हैं। अनुशासन की शिक्षा पाते हैं। कर्तव्यनिष्ठ बनते हैं और नियमनिष्ठता सीखते हैं। खेल से उनमें सृजनात्मक प्रवृति विकसित होती है। खेल के माध्यम से अपनी उलझन और समस्याओं को व्यक्त करते हैं। उनकी इस अभिव्यक्ति से, उनके माता-पिता अभिभावक, और शिक्षक उनके मनोभावों, समस्याओं और उलझनों को समझ सकते हैं, जिससे उनके असामान्य व्यवहार का समाधान कर सामान्य बनाने सफल हो सकते हैं।
खेल के द्वारा बच्चों निम्न लिखित विकास होते हैं:—

1. शारीरिक विकास 2. मानसिक विकास
3. संवेगात्मक विकास 4. सामाजिक विकास
5. नैतिक विकास 6. शैक्षिक विकास
7. व्यक्तित्व का विकास 8. अवकाश का सदुपयोग
9. उपचारात्मक महत्व 10. बच्चों में स्वयं अपने को समझना

Scanned with CamScanner

बच्चों के खेलों की विशेषताएं

बच्चों के खेलों की अपनी कुछ विशिष्ट विशेषताएं होती हैं। बच्चों के खेल बड़ों से भिन्न होते हैं। बच्चों के खेलों की निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं —

1. <u>एक निश्चित विकास-क्रम</u> : बच्चों के खेलों का विकास निश्चित रहता है। सबसे पहले शिशु के हाथ की क्रिया का विकास होता है। एक वर्ष का बच्चा खिलौनों से खेलता है। दो वर्ष की आयु तक वह खिलौनों को सजीव वस्तु समझ कर खेलता है। खिलौनों से खेलने की प्रवृत्ति लगभग आठ वर्ष तक, बराबर बढ़ती ही जाती है। इसके बाद बच्चों का ध्यान सामूहिक खेलों पर चला जाता है। दस वर्ष की आयु में खेलों में रुचि कम होने लगती है क्योंकि कुछ समय पढ़ाई आदि में चला जाता है। इसके बाद दिवास्वप्न का उदय होता है। यह एक प्रकार का मानसिक खेल होता है जिसके द्वारा बच्चा अपनी दमित, अतृप्त और अपूर्ण इच्छाओं की पूर्ति करता है।

2. निश्चित प्रतिरूप : बच्चे अपने से बड़े बच्चों द्वारा खेले गये खेलों को ही खेलता है। हर पीढ़ी में बच्चे उसी प्रकार से पूर्व पीढ़ी द्वारा, उस आयु में खेले गये, खेलों को खेलता है।

3. बच्चों के खेल पारम्परिक भी होते हैं : बच्चे खेल अपने से पहले वालों की परम्परा पर ही चलते हैं।

4. बच्चों के खेल परिवर्तनशील होते हैं : बच्चों के खेल का स्वरूप आयु के बढ़ने के साथ-साथ परिवर्तित होता जाता है।

Scanned with CamScanner

5. खेल की प्रकृति में परिवर्तन : पूर्व बाल्यावस्था के खेल अनौपचारिक होते हैं। आयु बढ़ने के साथ-साथ खेल औपचारिक होते जाते हैं क्योंकि बाद के खेलों में नियम-पालन जरूरी होता है।

6. खेलों की पुनरावृति : बच्चे एक ही खेल को बार-बार खेलते हैं। एक ही खेल को प्रतिदिन खेलने में उन्हें आनन्द आता है।

7. नियमों से मुक्त खेल : आरम्भिक खेलों में किसी प्रकार की नियमितता नहीं रहती है। उनका कोई निश्चित समय, संख्याओं की संख्या तथा नियमों की बाध्यता नहीं रहती है।

8. बच्चों के खेल मौसम से बदलते हैं : जाड़े में वे प्रायः धूप में खेले जाने वाले खेलों को खेलते हैं जबकि गर्मी में छायादार पर खेले जाने वाले खेल खेलते हैं।

9. नए खेलों में रुचि : यद्यपि बच्चे एक ही खेल को काफी समयतक खेल सकते हैं परन्तु नए-नए खेलों को सीखने में रुचि रहती है।

10. भेद-भाव से मुक्त : ऊँच-नीच, अमीर-गरीब का अन्तर उनके खेलों में नहीं रहता है परन्तु बाद में धीरे-धीरे बच्चे केवल अपने स्तर के बच्चों के बीच खेलने में रुचि लेते हैं।

11. लड़के-लड़कियों के खेलों में अन्तर : बच्चों के प्रारम्भिक खेल लड़के और लड़कियों में समान रूप होते हैं। परन्तु कुछ बड़ा होने पर लड़कियों के खेल, लड़कों के खेलों से भिन्न प्रकृति और स्वरूप के हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner